PROF. RAMDARASH MISHRA

Prof. Ramdarash Mishra is a distinguished Hindi poet, novelist, critic, short-story writer and essayist. His literary contributions span across multiple genres, including poetry, fiction and critical essays.

2. Born on 31st January, 1925 in Dumari village, Gorakhpur district, Uttar Pradesh, Prof. Mishra completed his Master's and Doctorate degrees in Hindi from Banaras Hindu University, Varanasi. He served as a Professor at the University of Delhi and has been actively involved in academic and literary organizations. He has also been a member of various Hindi advisory boards in government ministries and literary institutions.

3. Prof. Mishra has authored more than 80 books, including poetry collections, novels, short story collections, essays, critiques, memoirs, autobiographies, diaries and literary anthologies. His works embody themes of social reality, rural life, human relationships and contemporary concerns. His poetry collections include Path ke Geet, Baerang-Benam Chitthiyan, Pak Gai Hai Dhoop, Kandhe par Suraj, Din Ek Nadi Ban Gaya, Baajaar ko Nikale hain Log, Juloos Kahan Ja Raha Hai?, Aag Kuchh Nahin Bolati, Shabd Setu, Barish Men Bhigate Bachche, Hansi Othh Par Aakhen Nam Hain (Ghazal collection), Aise Men Jab Kabhi, Aamke Patte, Tu Hi Bataa Ai Jindagi (Ghazal collection), Havayen Saath Hain (Ghazal collection), Kabhi-Kabhi In Dinon, Dhoopke Tukaden, Aagki Hansi, Lamhe Bolte Hain, Aur Ek Din, Main To Yahan Hun, Rat Sapne Mein, Sapna Sada Palta Raha (Ghazal collection), among others. His novels, such as Panike Pracir, Jal Tootata Hai, Sookhata Hai Talaab, Apane Log, Raatka Safar, Aakashki Chhat, Aadim Raag, Bina Darvajeka Maquan, Doosara Ghar, Thaki Hui Subah, Bis Baras, Parivaar, Bachpan Bhaskar Ka, Ek Bachpan Yeh Bhi, and Ek Tha Kalakar, reflect deep social consciousness. His autobiography, Sahachar Hai Samay, is considered one of the finest Hindi autobiographies. His short stories and essays are widely recognized for their narrative depth and critical perspectives. His complete works have been compiled into 14 volumes. Many of his works have been translated into English, Gujarati, Kannada, Malayalam, and other Indian languages.

4. Prof. Mishra has held several important academic and literary positions, including serving as President of Bharatiya Lekhak Sangathan (1984-1990), Chief Secretary of Sahityik Sangh (1952-55), and President of Gujarat Hindi Pradhyapak Parishad (1960-64). He has also been a member of Sahitya Akademi, the Hindi Advisory Board in several Ministries of the Government of India and syllabus committees in various universities. Additionally, he has chaired sessions at Sahitya Akademi, Hindi Akademi, and other prominent literary institutions. His works have been included in the syllabi of various universities and colleges, and numerous research studies (Ph.D. dissertations) have been conducted on his literary contributions. His influence extends beyond academia, as his writings continue to inspire contemporary Hindi literature and scholarship.

5. Prof. Mishra has received numerous prestigious awards and honors, including the Sahitya Akademi Award (2015), Saraswati Samman (2021) of K. K. Birla Foundation and Rashtriya Kabir Samman (2022) of the Govt. of Madhya Pradesh,Vyas Samman (2011) K. K. Birla Foundation, Bharat Bharati Award (2005) Uttar Pradesh Hindi Sansthaan, Shalaka Award (2001)of Hindi Akademi, Mahapandit Rahul Sankrityayan Award (2004) of Kendriya Hindi Sansthan, Agra, Sahitya Bhushan Award (1996) Uttar Pradesh Hindi Sansthaan, Dayavati Modi Kavi Shekhar Award (1998) among others. His book Aag ki Hansi received the Sahitya Akademi Award in 2015.

प्रो. रामदरश मिश्र

प्रो. रामदरश मिश्र प्रतिष्ठित हिंदी कवि, उपन्यासकार, आलोचक, लघुकथाकार और निबंधकार हैं। इनका साहित्यिक योगदान कविता, कथा और आलोचनात्मक निबंध सहित कई विधाओं में है।

2. 31 जनवरी, 1925 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के डुमरी गांव में जन्में, प्रो. मिश्र ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी से हिंदी में मास्टर और डॉक्टरेट की डिग्री हासिल की। इन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के रूप में काम किया और अकादमिक और साहित्यिक संगठनों में सक्रिय रूप से शामिल रहे। वह सरकारी मंत्रालयों और साहित्यिक संस्थानों में विभिन्न हिंदी सलाहकार बोर्डों के सदस्य भी रहे हैं।

3. प्रो. मिश्र ने 80 से अधिक किताबें लिखी हैं, जिनमें कविता संग्रह, उपन्यास, लघु कहानी संग्रह, निबंध, आलोचनाएँ, संस्मरण, आत्मकथाएँ, डायरी और साहित्यिक संकलन शामिल हैं। इनकी रचनाओं में सामाजिक वास्तविकता, ग्रामीण जीवन, मानवीय संबंध और समकालीन सरोकार शामिल हैं। इनके कविता संग्रहों में पथ के गीत, बैरंग–बेनाम चिट्ठियाँ, पक गई है धूप, कंधे पर सूरज, दिन एक नदी बन गया, बाजार को निकले हैं लोग, जुलूस कहां जा रहा है?, आग कुछ नहीं बोलती, शब्द सेतु, बारिश में भीगते बच्चे, हंसी ओठ पर आखें नम हैं (ग़ज़ल संग्रह), ऐसे में जब कभी, आम के पत्ते, तू ही बता ऐ जिंदगी (ग़ज़ल संग्रह), हवाएँ साथ हैं (ग़ज़ल संग्रह), कभी–कभी इन दिनों, धूप के टुकड़े, आग की हंसी, लम्हे बोलते हैं, और एक दिन, मैं तो यहां हूं, रात सपने में, सपना सदा पलता रहा (ग़ज़ल संग्रह), अन्य शामिल हैं। इनके उपन्यास, जैसे पानी के प्राचीर, जल टूटता है, सूखता है तालाब, अपने लोग, रात का सफर, आकाश की छत, आदिम राग,बिना दरवाजे का मकान, दूसरा घर, थकी हुई सुबह, बीस बरस, परिवार, बचपन भास्कर का, एक बचपन ये भी, और एक था कलाकार गहरी सामाजिक चेतना को दर्शाते हैं। इनकी आत्मकथा, सहचर है समय को हिंदी की सबसे बेहतरीन आत्मकथाओं में से एक माना जाता है। इनकी लघु कथाएँ और निबंध अपनी कथात्मक गहराई और आलोचनात्मक दृष्टिकोण के लिए व्यापक रूप से पहचाने जाते हैं। इनकी संपूर्ण कृतियाँ 14 खंडों में संकलित की गई हैं। इनकी कई कृतियों का अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

4. प्रो. मिश्र ने भारतीय लेखक संगठन के अध्यक्ष (1984–1990), साहित्यिक संघ के मुख्य सचिव (1952–55), और गुजरात हिंदी प्राध्यापक परिषद के अध्यक्ष समेत कई महत्वपूर्ण शैक्षणिक और साहित्यिक पदों पर कार्य किया है। वह साहित्य अकादमी, भारत के कई मंत्रालयों में हिंदी सलाहकार बोर्ड और विभिन्न विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम समितियों के सदस्य रहे हैं। इसके अलावा, इन्होंने साहित्य अकादमी, हिंदी अकादमी और अन्य प्रमुख साहित्यिक संस्थानों में सत्रों की अध्यक्षता भी की है। इनकी रचनाओं को विभिन्न विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के पाठ्यक्रमों में शामिल किया है और इनके साहित्यिक योगदान पर कई शोध अध्ययन (पीएचडी शोध प्रबंध) किए गए हैं। इनका प्रभाव अकादमिक दायरे से परे भी फैला हुआ है, क्योंकि इनके लेखन ने समकालीन हिंदी साहित्य और विद्वत्ता को प्रोत्साहित करना जारी रखा है।

5. प्रो. मिश्र को साहित्य अकादमी पुरस्कार (2015), के. के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा सरस्वती सम्मान (2021), और मध्य प्रदेश सरकार द्वारा राष्ट्रीय कबीर सम्मान (2022), के के बिड़ला फाउंडेशन द्वारा व्यास सम्मान (2011), उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा भारत भारती पुरस्कार (2005), हिंदी अकादमी द्वारा शलाका पुरस्कार (2001), केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार (2004), उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा साहित्य भूषण पुरस्कार (1996), दयावती मोदी कवि शेखर पुरस्कार (1998) और अन्य सहित अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इनके पुस्तक आग की हंसी को 2015 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।